चौदे लोक की दुनिया क्षर है,अक्षरब्रह्म क्षर के पारा
अक्षरातीत की लीला न्यारी,
जो इन्न दोनों से भी न्यारा
1- तीन गुण और पांच तत्व से,
बनी जो वस्तु फानी है
कालमाया का है ब्रह्मांड ये,
दुख ही दुख इसकी निशानी है
कोई न इसके फंद से निकले,
मिले कभी न मुक्ति द्वारा
2- लीला सत की होती जिसमें,
अखण्ड वहां की धरती है
अक्षरब्रह्म मालिक कहलाते,
योगमाया की धरती है
क्षण में कई ब्रह्माण्ड बनावे,
होवे फना जो करें इशारा
3- प्रेममयी भूमि है नूर की,
सच्चिदानंद जहां रहते हैं
प्रेम की लीला होती निसदिन,
वेद शास्त्र भी कहते हैं
नूर भरा कण कण के अन्दर,
लीला धाम की अपरम्पारा

Nijanand App

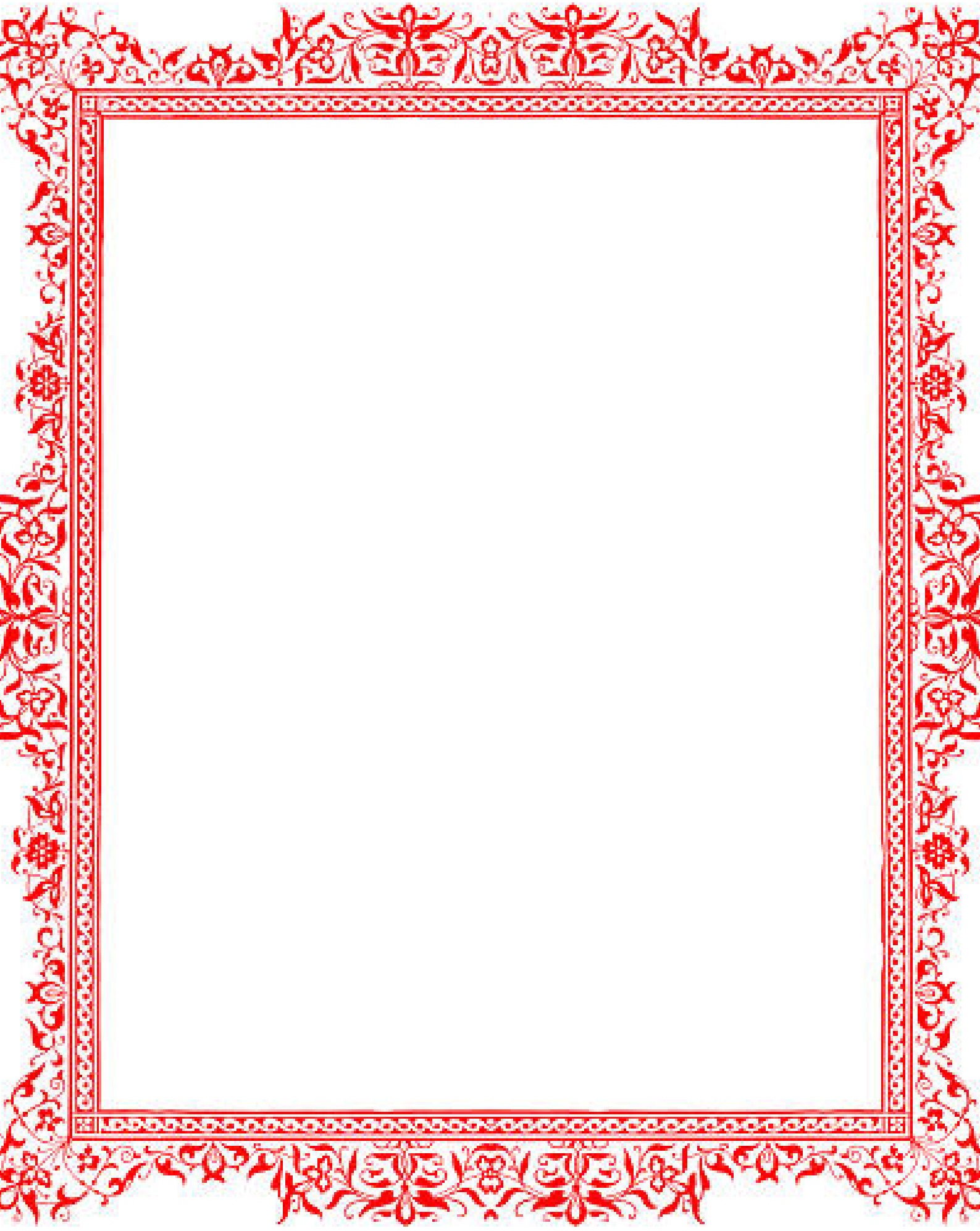

Nijanand App